International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति विभिन्न विषयों के शोधार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ. बीना इन्द्राणी

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 226007.

शोध सार

भारतीय ज्ञान परंपराएँ भारत में दीर्घकाल से विकसित, संरक्षित एवं निरंतर प्रवाहित ज्ञान, चिंतन तथा व्यवहार की विविध परंपराओं का व्यापक समुच्चय हैं। इनमें दर्शन, तर्कशास्त्र, भाषा एवं व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, कृषि, स्थापत्य-कला, साहित्य, शासन एवं नैतिकता सहित विभिन्न ज्ञान-विषय सम्मिलित हैं। भारतीय दार्शनिक परंपराओं में ज्ञान की प्रकृति, उसके स्रोत तथा ज्ञान-प्राप्ति के साधनों पर भी व्यवस्थित एवं तार्किक चिंतन किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य विभिन्न विषयों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना तथा विषयगत आधार पर जागरूकता में विद्यमान विविधता का विश्लेषण करना है। अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपराओं के विभिन्न आयामों के संदर्भ में शोधार्थियों की जागरूकता का प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया है। प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अंतर्विषयकता एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान से संबंधित आयाम में शोधार्थियों का जागरूकता स्तर अपेक्षाकृत अधिक रहा। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि शोधार्थी भारतीय ज्ञान परंपराओं को आधुनिक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक संदर्भों से जोड़ने की संभावनाओं से परिचित हैं। इसके विपरीत, शोध के लिए तत्परता एवं शोध-कार्यप्रणाली से संबंधित जागरूकता अपेक्षाकृत कम पाई गई। अध्ययन के आधार पर यह आवश्यकता परिलक्षित होती है कि शोधार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपराओं के मूल स्रोतों, शोध-पद्धतियों, विश्वसनीय संदर्भ-स्रोतों, शैक्षणिक डेटाबेस, शोध-पत्रिकाओं तथा शोध-प्रस्ताव निर्माण से संबंधित व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। अतः उच्च शिक्षा एवं शोध के साथ भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रभावी एकीकरण हेतु विषय-आधारित प्रशिक्षण, अंतर्विषयक शोध तथा व्यावहारिक शोध-अवसरों को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

संकेत शब्द- भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारतीय दर्शन, जागरूकता

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-धाराओं में से एक है, जिसका आधार केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, पर्यावरण, कृषि, कला, भाषा, योग तथा नैतिक मूल्यों जैसे विविध क्षेत्रों तक विस्तृत है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य, आयुर्वेद, योगशास्त्र तथा विभिन्न दार्शनिक परम्पराएँ भारतीय ज्ञान-संपदा की अमूल्य धरोहर हैं। इन ज्ञान परम्पराओं ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, जीवन-दृष्टि तथा मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)।

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी विकास तथा ज्ञान-आधारित समाज के युग में भारतीय ज्ञान परम्पराओं का पुनर्स्थापन एक महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता के रूप में उभरकर सामने आया है। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा राष्ट्रीय

पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाविष्ट करने पर विशेष बल दिया गया है। इन दस्तावेज़ों के अनुसार विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति समझ, जागरूकता तथा शोधाभिमुख दृष्टिकोण विकसित करना गुणवत्तापूर्ण एवं भारतीय संदर्भों पर आधारित शिक्षा के लिए आवश्यक है।
शोधार्थी किसी भी ज्ञान-परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं नवाचार के प्रमुख आधार होते हैं। विभिन्न विषयों के शोधार्थी अपने-अपने अध्ययन क्षेत्रों में नवीन ज्ञान का सृजन करते हैं तथा समाज को दिशा प्रदान करते हैं। यदि उनमें भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति पर्याप्त जागरूकता होगी, तो वे अपने शोध कार्यों में भारतीय ज्ञान, स्थानीय परम्पराओं तथा स्वदेशी दृष्टिकोणों को समुचित स्थान दे सकेंगे। इसके विपरीत जागरूकता का अभाव भारतीय ज्ञान-संपदा के समुचित उपयोग एवं उसके वैश्विक प्रसार में बाधा उत्पन्न कर सकता है।
वर्तमान समय में यह अनुभव किया जा रहा है कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शिक्षा, प्रबंधन, वाणिज्य, कला तथा अन्य विषयों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता का स्तर समान नहीं है। विषयगत भिन्नता, पाठ्यक्रम, शोध-अनुभव तथा संस्थागत वातावरण के कारण इस जागरूकता में अंतर देखने को मिल सकता है। अतः विभिन्न विषयों के शोधार्थियों की भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक है।
प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य विभिन्न विषयों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना तथा विषयगत आधार पर संभावित भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन, उच्च शिक्षा में इसके समावेशन तथा शोध संस्कृति को भारतीय दृष्टिकोण से समृद्ध बनाने की दिशा में उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकता है।

उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान परम्पराओं की अवधारणा, दार्शनिक आधार, शैक्षिक निहितार्थ एवं समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
2. विभिन्न विषयों के शोधार्थियों की भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता का विश्लेषण करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों की प्रकृति के अनुरूप सैद्धांतिक एवं वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। उद्देश्य–1 की प्राप्ति हेतु सैद्धांतिक विधि तथा उद्देश्य–2 की प्राप्ति हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत प्रतिशत विधि द्वारा किया गया, जिसके माध्यम से विभिन्न संकायों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन किया गया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति जागरूकता के स्तर के मापन हेतु स्वनिर्मित भारतीय ज्ञान प्रणाली जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है। मापनी में नौ आयामों के अंतर्गत कुल 41 कथनों को सम्मिलित किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्पराओं की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परम्पराएँ भारत में दीर्घकाल से विकसित एवं संरक्षित ज्ञान, चिंतन और व्यवहार की विविध परम्पराओं का व्यापक समुच्चय हैं। इनमें दर्शन, तर्कशास्त्र, भाषा एवं व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, कृषि, स्थापत्य, कला,

साहित्य, शासन, नैतिकता तथा सामाजिक चिंतन जैसे अनेक ज्ञान-क्षेत्र सम्मिलित हैं। इन परम्पराओं का विकास विभिन्न ग्रंथों, विद्वानों, शिक्षण परम्पराओं तथा सामाजिक व्यवहारों के माध्यम से हुआ है। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा को किसी एक विषय, ग्रंथ अथवा दार्शनिक मत तक सीमित नहीं किया जा सकता; यह विभिन्न ज्ञान-परम्पराओं और बौद्धिक धाराओं का विस्तृत क्षेत्र है (कपूर एवं सिंह, 2005)।

भारतीय ज्ञान परम्परा की एक प्रमुख विशेषता ज्ञान को विभिन्न क्षेत्रों में विकसित एक निरंतर बौद्धिक परम्परा के रूप में देखना है। कपूर एवं सिंह (2005) के अनुसार, भारतीय ज्ञान-परम्पराओं में तर्क, दर्शन, भाषा, विज्ञान, चिकित्सा, गणित एवं खगोलशास्त्र, कृषि, राजनीति एवं शासन, कला एवं सौंदर्यशास्त्र तथा सामाजिक चिंतन आदि अनेक क्षेत्र शामिल रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरूप बहुविषयक है और इसका संबंध केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक ज्ञान से नहीं है।

भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में ज्ञान की प्रकृति तथा ज्ञान प्राप्ति के साधनों पर भी व्यवस्थित विचार किया गया है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत जैसे दर्शन भारतीय दार्शनिक चिंतन की प्रमुख धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके अतिरिक्त बौद्ध, जैन और चार्वाक परम्पराओं ने भी भारतीय बौद्धिक विमर्श को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है (राधाकृष्णन एवं मूर, 1957)। इस विविधता के कारण भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान, सत्य, अनुभव, तर्क, नैतिकता और जीवन के उद्देश्य के संबंध में अनेक दृष्टिकोण विकसित हुए।

भारतीय ज्ञान परम्पराओं में ज्ञान का संबंध जीवन एवं व्यवहार से भी जोड़ा गया है। दासगुप्त (1975) भारतीय दर्शन के विकास का विश्लेषण करते हुए विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों की ज्ञानमीमांसीय, तात्त्विक तथा नैतिक मान्यताओं को स्पष्ट करते हैं। इसी प्रकार ज़िम्मर (1969) भारतीय दार्शनिक चिंतन में आत्म-अन्वेषण, नैतिक अनुशासन तथा मुक्ति से संबंधित विचारों को महत्वपूर्ण मानते हैं। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान परम्पराओं की अवधारणा को ज्ञान के सैद्धांतिक अध्ययन के साथ-साथ व्यक्ति, समाज और जीवन से संबंधित व्यापक चिंतन के रूप में समझा जा सकता है।

समकालीन शैक्षिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्पराओं की अवधारणा को समझना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे भारतीय बौद्धिक विरासत के विभिन्न पक्षों का अकादमिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन संभव होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी भारतीय ज्ञान परम्पराओं, भाषाओं, संस्कृति एवं ज्ञान-संपदा को शिक्षा के विविध स्तरों से जोड़ने पर बल देती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। अतः भारतीय ज्ञान परम्पराएँ एक बहुविषयक ज्ञान-विरासत के रूप में शोध, शिक्षा एवं ज्ञान-सृजन के लिए महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करती हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा का दार्शनिक आधार

भारतीय ज्ञान परम्परा का दार्शनिक आधार एकरूप न होकर विविध एवं बहुस्तरीय है। इसमें ज्ञान, वास्तविकता, आत्मा, जगत, नैतिकता तथा मानव जीवन के उद्देश्य से संबंधित प्रश्नों पर विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं ने स्वतंत्र रूप से विचार किया है। वेद एवं उपनिषद भारतीय दार्शनिक चिंतन के प्रमुख स्रोत हैं, जिनमें आत्मा, ब्रह्म, सत्य तथा ज्ञान से संबंधित प्रश्नों पर विमर्श मिलता है (राधाकृष्णन एवं मूर, 1957)।

सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति के द्वैत तथा विवेकज्ञान के माध्यम से वास्तविकता को समझने पर बल दिया गया है। योग दर्शन पतंजलि के योगसूत्र में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत हुआ है और चित्तवृत्ति-निरोध तथा अनुशासित साधना को केंद्रीय स्थान देता है (दासगुप्त, 1975)। सांख्य और योग दोनों भारतीय दार्शनिक परम्परा में मानव अनुभव, ज्ञान और मुक्ति से संबंधित महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

न्याय दर्शन भारतीय ज्ञानमीमांसा और तर्कपरम्परा की महत्वपूर्ण धारा है। इसमें वैध ज्ञान की प्राप्ति के साधनों तथा तर्कपूर्ण विचार-विमर्श का व्यवस्थित अध्ययन मिलता है। न्याय परम्परा में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द को प्रमाण

के रूप में स्वीकार किया गया है (राधाकृष्णन एवं मूर, 1957; हिरियन्ना, 1993)। इस प्रकार न्याय दर्शन भारतीय चिंतन में प्रमाण, तर्क और युक्तिपूर्ण ज्ञान की महत्ता को स्पष्ट करता है।

वेदांत दर्शन उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता से संबद्ध व्यापक दार्शनिक परम्परा है। इसके अंतर्गत विभिन्न आचार्यों ने ब्रह्म, आत्मा और जगत के संबंध की अलग-अलग व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं। आदि शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत इस परम्परा की प्रमुख दार्शनिक व्याख्याओं में से एक है (दासगुप्त, 1975; हिरियन्ना, 1993)।

इसके साथ बौद्ध और जैन दर्शन भी भारतीय दार्शनिक चिंतन की महत्वपूर्ण परम्पराएँ हैं। बौद्ध दर्शन में दुःख, उसके कारण, उसके निरोध और उससे संबंधित मार्ग का विश्लेषण किया गया है, जबकि जैन दर्शन में अहिंसा, अनेकांतवाद तथा नैतिक अनुशासन को विशेष महत्व प्राप्त है (राधाकृष्णन एवं मूर, 1957)। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा को किसी एक दार्शनिक मत तक सीमित करने के बजाय विभिन्न ज्ञानमीमांसीय, तात्त्विक और नैतिक परम्पराओं के व्यापक बौद्धिक विकास के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है (दासगुप्त, 1975)।

भारतीय ज्ञान परम्पराओं के शैक्षिक निहितार्थ

भारतीय ज्ञान परम्पराएँ आधुनिक शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्यपरक तथा जीवनोपयोगी बनाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करती हैं। प्रमुख निहितार्थ निम्नलिखित हैं—

1. **समग्र शिक्षा** – शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल देती है।
2. **मूल्यपरक शिक्षा** – सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सेवा, अनुशासन एवं उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों के विकास को प्रोत्साहित करती है।
3. **अनुभवात्मक एवं सक्रिय अधिगम**– गुरु-शिष्य परम्परा, संवाद, अभ्यास, चिंतन, मनन एवं स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञानार्जन पर बल देती है।
4. **पर्यावरणीय चेतना एवं सतत् विकास** – प्रकृति के प्रति सम्मान, जैव विविधता के संरक्षण तथा सतत् जीवन शैली को शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है।
5. **आलोचनात्मक एवं चिंतनशील सोच** – न्याय दर्शन एवं अन्य भारतीय दार्शनिक परम्पराएँ तर्क, प्रमाण, विश्लेषण एवं विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता के विकास पर बल देती हैं।
6. **स्थानीय एवं स्वदेशी ज्ञान का सम्मान** – लोकज्ञान, पारंपरिक विज्ञान, स्थानीय तकनीकों तथा सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा एवं अनुसंधान में उचित स्थान प्रदान करती है।
7. **चरित्र निर्माण एवं नैतिक नेतृत्व** – शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि सदाचारी, उत्तरदायी एवं नेतृत्वक्षम नागरिक का निर्माण करना है।
8. **समावेशी एवं समानतामूलक शिक्षा** – भारतीय चिंतन *"वसुधैव कुटुम्बकम्"* तथा *"सर्वे भवन्तु सुखिनः"* के सिद्धांतों के आधार पर समान अवसर, सामाजिक न्याय एवं समावेशन को बढ़ावा देता है।
9. **जीवन-कौशल एवं आत्मनिर्भरता का विकास** – आत्मअनुशासन, आत्मनिर्भरता, समस्या-समाधान, निर्णय क्षमता, सहयोग एवं आत्मविश्वास जैसे जीवन-कौशलों का विकास करता है।
10. **शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन** – भारतीय ज्ञान परम्पराएँ जिज्ञासा, प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति, अनुसंधान, अंतःविषयक अध्ययन तथा नवीन ज्ञान के सृजन को प्रेरित करती हैं, जिससे शिक्षा और अनुसंधान अधिक भारतीय एवं वैश्विक दोनों संदर्भों में प्रासंगिक बनते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्पराओं की समकालीन प्रासंगिकता

21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्पराएँ वैश्विक स्तर पर पुनः प्रासंगिक हो रही हैं। योग, आयुर्वेद, ध्यान, सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण, मानसिक स्वास्थ्य तथा नैतिक नेतृत्व जैसे क्षेत्रों में इनका महत्व निरंतर बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या, शोध तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समाहित करने पर विशेष बल दिया गया है। आज के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्पराएँ न केवल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का माध्यम हैं, बल्कि नवाचार, सतत् विकास, वैश्विक नागरिकता तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अतः विभिन्न विषयों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता का विकास भारतीय उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

विभिन्न विषयों के शोधार्थियों की भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता

प्रस्तुत शोध पत्र विषयक भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रति विभिन्न विषयों के शोधार्थियों की जागरूकता का अध्ययन में विभिन्न विषय के शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया जिसमें शिक्षाशास्त्र विभाग के 42 विद्यार्थियों ने, इतिहास विषय के 6, अर्थशास्त्र के एक, विधि विषय के एक व वनस्पति विज्ञान के एक शोधार्थी ने प्रतिभाग किया। भारतीय ज्ञान प्रणाली जागरूकता मापनी को दो खंडों में विभाजित कर निम्नलिखित आयामों के आधार पर संकलित किया गया-

खंड-1 मुख्य मनोमितीय जागरूकता

1. **बुनियादी अवधारणाएं एवं ज्ञान मीमांसा (A1-A6)**
2. **सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था (B1-B5)**
3. **भाषा, साहित्य एवं सौन्दर्य (C1-C4)**
4. **पारिस्थितिकी- ब्रम्हांड विज्ञान, मनोविज्ञान और स्थिरता (D1-D3)**

खंड-2 पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र की जागरूकता

5. **वैचारिक एवं पारिभाषिक समझ (E1-E8)**
6. **अन्तःविषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान (F1-F4)**
7. **पाठ्यचर्या सुधार एवं नीति (G1-G4)**
8. **अनुभूत बाधाएं एवं अकादमिक संशयवाद (H1-H3)**
9. **शोध के लिए तत्परता एवं कार्यप्रणाली (I1-I4)**

आयामों और उनके एकांशों को प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया जिसमें निम्नलिखित आयामों के अंतर्गत-

आयाम 1- बुनियादी अवधारणाएं एवं ज्ञान मीमांसा के अंतर्गत 77.7% शोधार्थी पारंपरिक भारतीय ज्ञान ग्रंथों की बुनियादी संरचना (जैसे वेद, उपवेद और वेदांग के बीच अंतर) से परिचित है। 76.6% शोधार्थी मुख्य दार्शनिक प्रणालियों को समझते हैं। 89.05% शोधार्थी भारतीय दर्शन की आस्तिक (रूढ़िवादी) और नास्तिक (गैर-रूढ़िवादी) विचारधाराओं की जानकारी रखते हैं। 72.83% शोधार्थी धर्म (सही कर्तव्य) और ऋत (ब्रह्मांडीय/नैतिक व्यवस्था) की अवधारणाएँ भारतीय सामाजिक चिंतन में नैतिक आधार के रूप में कैसे काम करती हैं के विषय में जानकारी रखते हैं। 73.9% शोधार्थी पुरुषार्थ के सिद्धांत को मानव विकास के एक समग्र मॉडल के रूप में मानते हैं। 72.07% शोधार्थी पश्चिमी शोध पद्धतियों के संदर्भ में प्रमाण शास्त्र की अवधारणा को समझते हैं। आयाम- बुनियादी अवधारणाएं एवं ज्ञान मीमांसा के प्रति 77.04% शोधार्थी जागरूक है।

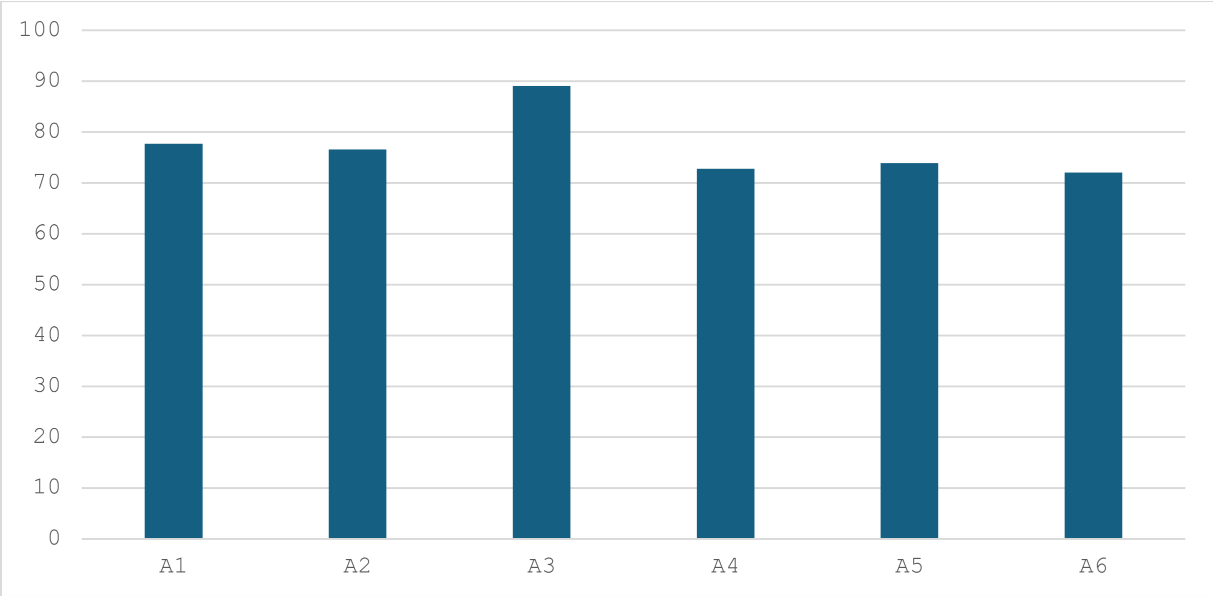

ग्राफ-1: आयाम 1 के एकांशों का प्रतिशत

प्रस्तुत ग्राफ से स्पष्टतः देखा जा सकता है कि शोधार्थियों में भारतीय दर्शन की आस्तिक (रूढ़िवादी) और नास्तिक (गैर-रूढ़िवादी) विचारधाराओं की जानकारी अधिक है जबकि प्राप्त प्रतिशत के आधार पर शोधार्थियों में पश्चिमी शोध पद्धतियों के संदर्भ में प्रमाण शास्त्र की अवधारणा की समझ कम है।

आयाम 2 - सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के अंतर्गत 62.26% शोधार्थी राज्य-संचालन, शासन और कूटनीति पर प्राचीन भारतीय ग्रंथों, जैसे कौटिल्य के अर्थशास्त्र या कामंदक के नीतिसार की जानकारी रखते हैं। 60% समझते हैं कि कैसे ऐतिहासिक भारतीय व्यापार प्रणालियों, व्यापारिक संघों (श्रेणियों) और कृषि पद्धतियों ने प्राचीन और मध्यकालीन अर्थव्यवस्थाओं को आकार दिया। 81.5% शोधार्थी मानते हैं कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए एक स्वदेशी आधार का काम करती है। 72.45% शोधार्थी भारतीय इतिहास में स्थानीय और विकेंद्रीकृत सामुदायिक शासन प्रणालियों से परिचित हैं। 67.16% शोधार्थी जानकारी रखते हैं कि भारतीय शास्त्रीय ग्रंथों में सामाजिक न्याय, सामुदायिक कल्याण (लोक-संग्रह) और धन के नैतिक वितरण की अवधारणाएँ किस प्रकार प्रस्तुत की गई हैं। आयाम-2 का समस्त प्रतिशत 68.67% है जो दर्शाता है कि शोधार्थी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रति जागरूकता रखते है।

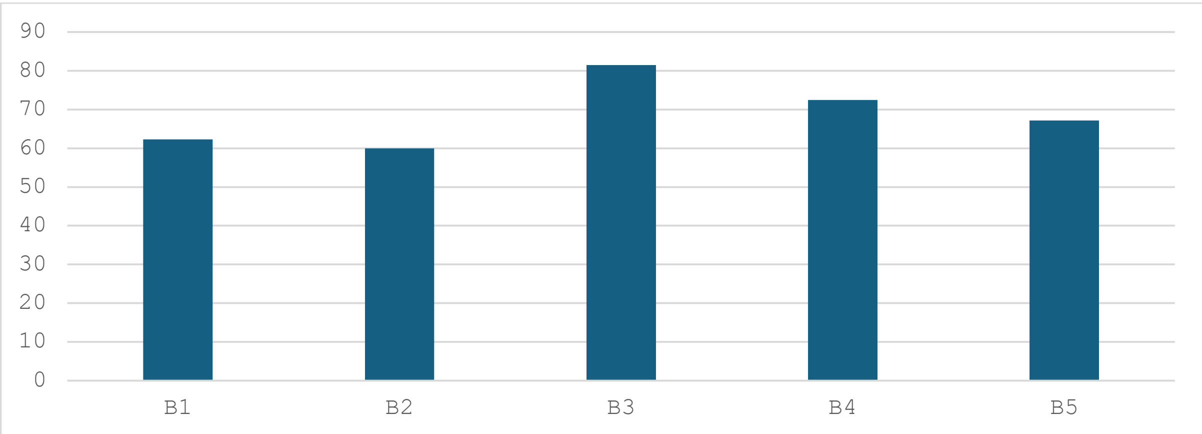

ग्राफ-2: आयाम 2 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 3- भाषा, साहित्य एवं सौन्दर्य के अंतर्गत 60.37% शोधार्थी संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं की भाषाई संरचना को समझते हैं। 56.6% शोधार्थी भरत मुनि के नाट्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना में रस और

भाव के सिद्धांतों के बुनियादी इस्तेमाल से परिचित हैं। 58.86% शोधार्थी ऐतिहासिक और सामाजिक ज्ञान के विश्वसनीय स्रोतों के तौर पर क्षेत्रीय मौखिक परंपराओं और लोक-कथाओं के विशाल भंडार के बारे में जानकारी रखते हैं। 75.84% शोधार्थी समझते हैं कि भारतीय महाकाव्य (रामायण और महाभारत) नैतिकता, विवाद सुलझाने और मानव मनोविज्ञान सिखाने के लिए किस तरह शिक्षा के साधन के तौर पर काम करते हैं। जबकि समस्त आयाम-3 भाषा, साहित्य एवं सौन्दर्य के प्रति 62.92% शोधार्थी जागरूकता रखते हैं।

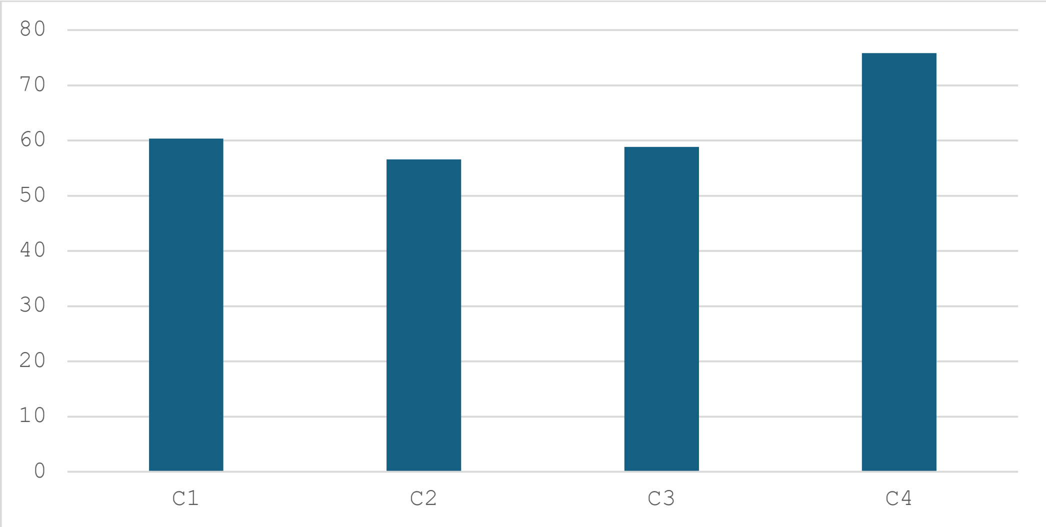

ग्राफ-3: आयाम 3 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 4- पारिस्थितिकी- ब्रम्हांड विज्ञान, मनोविज्ञान और स्थिरता के अंतर्गत 76.6% शोधार्थी मानते हैं कि पारंपरिक भारतीय पर्यावरण-नीति इंसान और प्रकृति के बीच गहरे और आपस में जुड़े रिश्ते की वकालत करती है। 66.79% शोधार्थी पानी जमा करने के पारंपरिक टिकाऊ तरीकों, वास्तु-कला (वास्तु शास्त्र) और पर्यावरण संरक्षण के तरीकों (जैसे पवित्र उपवन) की जानकारी रखते है। 74.71% शोधार्थी भारतीय मनोविज्ञान के योगदान को समझते हैं, जिसमें चेतना का अध्ययन, मन पर नियंत्रण (योग) और भावनाओं को नियंत्रित करना (माइंडफुलनेस) शामिल हैं। आयाम-4 पारिस्थितिकी- ब्रम्हांड विज्ञान, मनोविज्ञान और स्थिरता के प्रति 72.7% शोधार्थी जागरूक है।

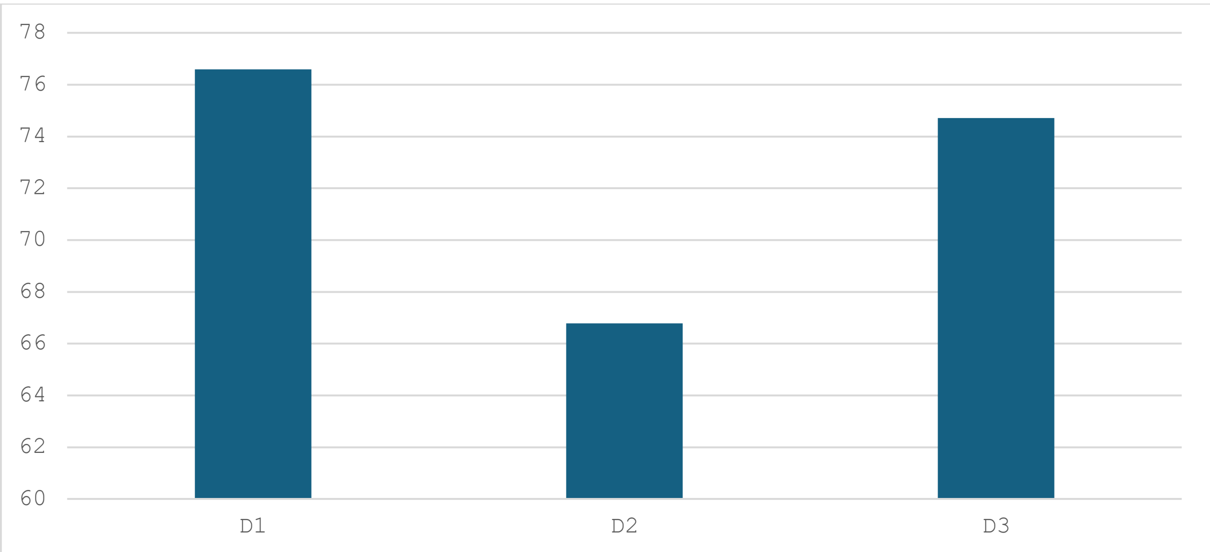

ग्राफ-4: आयाम 4 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 5- वैचारिक एवं पारिभाषिक समझ के अंतर्गत 78.11 प्रतिशत शोधार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने के निर्देश के बारे में पूरी जानकारी है। 75.84 प्रतिशत

शोधार्थियों को भरोसा है की वे अन्तः संबंधी विषयों को पढ़ा सकते हैं जो आधुनिक सामाजिक विज्ञान और IKS को जोड़ता हो। 44.52 प्रतिशत शोधार्थियों को पता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़े भरोसेमंद, पीयर-रिव्यूड स्रोत कहाँ मिलेंगे। 53.96 प्रतिशत शोधार्थियों को चतुर्दश विद्यास्थानम (पारंपरिक ज्ञान के 14 मुख्य हिस्से) के वर्गीकरण से परिचित हैं। 72.07 प्रतिशत शोधार्थी शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों और पश्चिमी दार्शनिक सोच के बीच ज्ञान-मीमांसा के बुनियादी अंतर को समझते हैं। 71.32 प्रतिशत शोधार्थी मुख्य अवधारणाओं जैसे ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन को समझ सकते हैं। 69.81 प्रतिशत शोधार्थियों को प्राचीन विद्वानों जैसे पाणिनि (भाषा-विज्ञान), आर्यभट्ट (खगोल-विज्ञान) और सुश्रुत (चिकित्सा-विज्ञान) के ऐतिहासिक योगदान के बारे में जानकारी है। 32.45 प्रतिशत शोधार्थी प्राचीन भारत के मुख्य दार्शनिक स्कूलों जैसे न्याय (तर्क-शास्त्र) या सांख्य को आसानी से पहचान सकते हैं। जबकि पूर्ण आयाम- पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र की जागरूकता के प्रति 66.5% शोधार्थी सजग हैं।

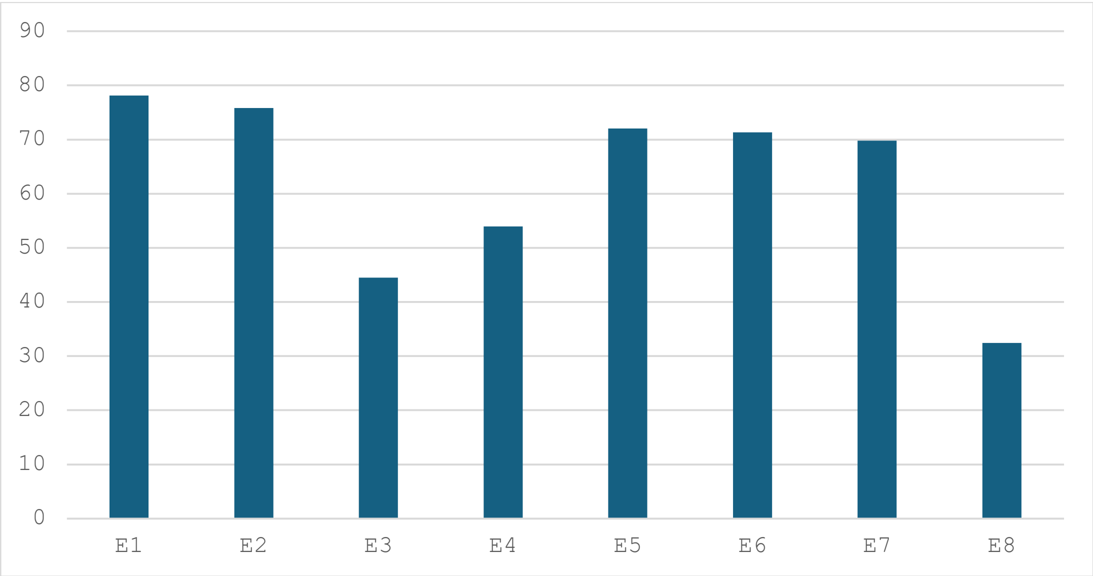

ग्राफ-5: आयाम 5 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 6- अन्त:विषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान के अंतर्गत 70.56 प्रतिशत शोधार्थी वैदिक गणित आधुनिक बीजगणित की जटिल समस्याओं को हल करने के लिए सही और वैकल्पिक तरीके कैसे दे सकते हैं। 46.03 प्रतिशत शोधार्थी आज की समग्र स्वास्थ्य सेवा में आयुर्वेद और योग के चिकित्सीय और निवारक महत्व को समझते हैं। 49.81 प्रतिशत शोधार्थी समझते है कि पानी जमा करने और खेती के पारंपरिक भारतीय तरीके आधुनिक पारिस्थितिक स्थिरता में कैसे योगदान देना है। 71.32 प्रतिशत शोधार्थी वास्तु शास्त्र में बताए गए उन वास्तुशिल्प और पर्यावरणीय सिद्धांतों को पहचान सकते हैं जो आधुनिक इंजीनियरिंग और टिकाऊ निर्माण पर लागू होते हैं। जबकि पूर्ण आयाम- अन्त:विषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान का प्रतिशत 99.4 है।

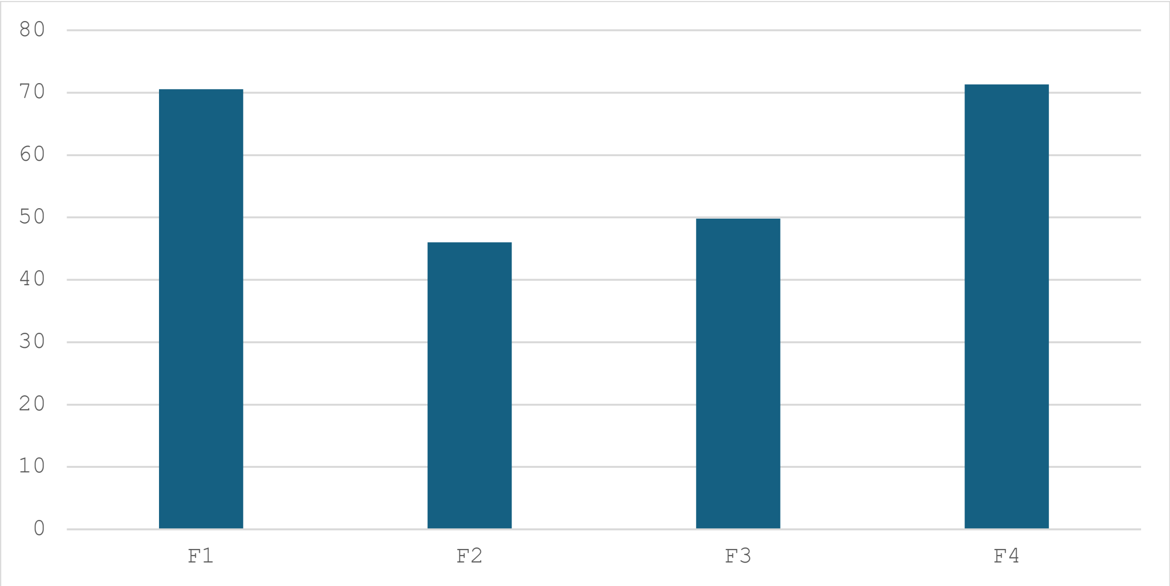

ग्राफ-6: आयाम 6 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 7-पाठ्यचर्या सुधार एवं नीति के अंतर्गत 68.67 प्रतिशत शोधार्थियों को एनईपी 2020 के तहत भारतीय ज्ञान प्रणालियों से जुड़े निर्देशों की अच्छी जानकारी है। 62.64 प्रतिशत स्नातकों और परास्नातकों को यूजीसी द्वारा जारी क्रेडिट-कोर्स गाइडलाइंस के बारे में पता है। 58.86 प्रतिशत शोधार्थियों को जानकारी है कि शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस डिवीज़न द्वारा उपलब्ध कराए गए पढ़ाने के तरीकों से जुड़े स्रोतों, संदर्भों या डेटाबेस तक कैसे पहुँचा जाए। 64.52 प्रतिशत विद्यार्थी आईकेएस शोध से जुड़े मौजूदा राष्ट्रीय शोध अनुदान के अवसरों के विषय में हमेशा अद्यतन रहते हैं। आयाम-पाठ्यचर्या सुधार एवं नीति के प्रति 65.3% शोधार्थी जागरूकता रखते हैं।

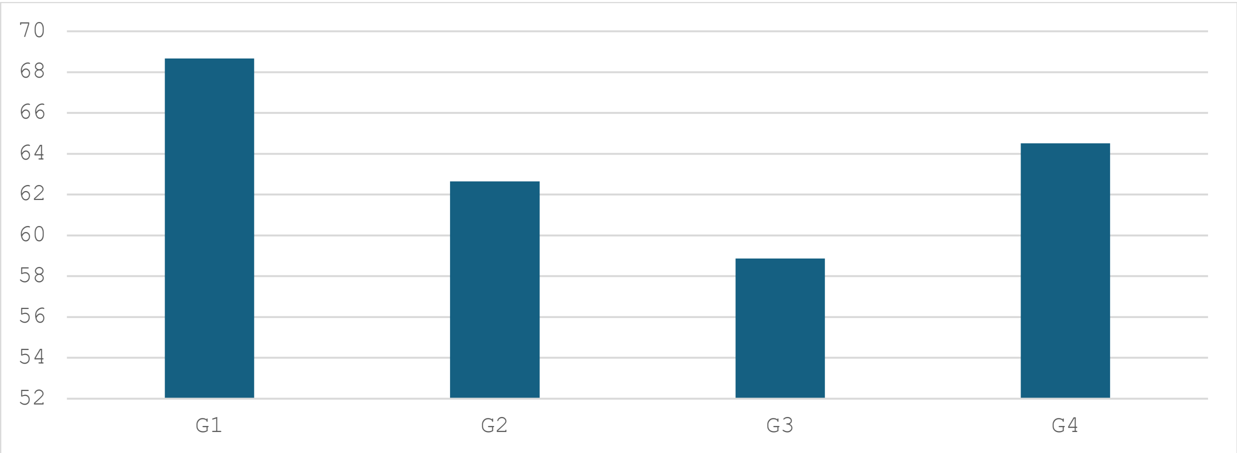

ग्राफ-7: आयाम 7 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 8- अनुभूत बाधाएं एवं अकादमिक संशयवाद के अंतर्गत 69.43 प्रतिशत शोधार्थियों को जानकारी है कि आज की उच्च शिक्षा में स्थानीय पद्धतियों के प्रति संरचनात्मक विरोध या पूर्वाग्रह अभी भी मौजूद हैं। 70.94 प्रतिशत शोधार्थियों को लगता है कि व्यवस्थित, अंतर-विषयक शोध विधियों की कमी के कारण आधुनिक प्रयोगशाला परिवेश में पारंपरिक अवधारणाओं को प्रमाणित करना मुश्किल हो जाता है। 66.03 प्रतिशत शोधार्थियों एहसास है कि ऐसे प्रशिक्षित संस्थागत

फैकल्टी की भारी कमी है जो बहु-विषयक आईकेएस पांडुलिपियों की सहकर्मी-समीक्षा (पीयर-रिव्यू) करने में सक्षम हों। आयाम 8- अनुभूत बाधाएं एवं अकादमिक संशयवाद प्रति 68.3 प्रतिशत शोधार्थी जागरूक हैं।

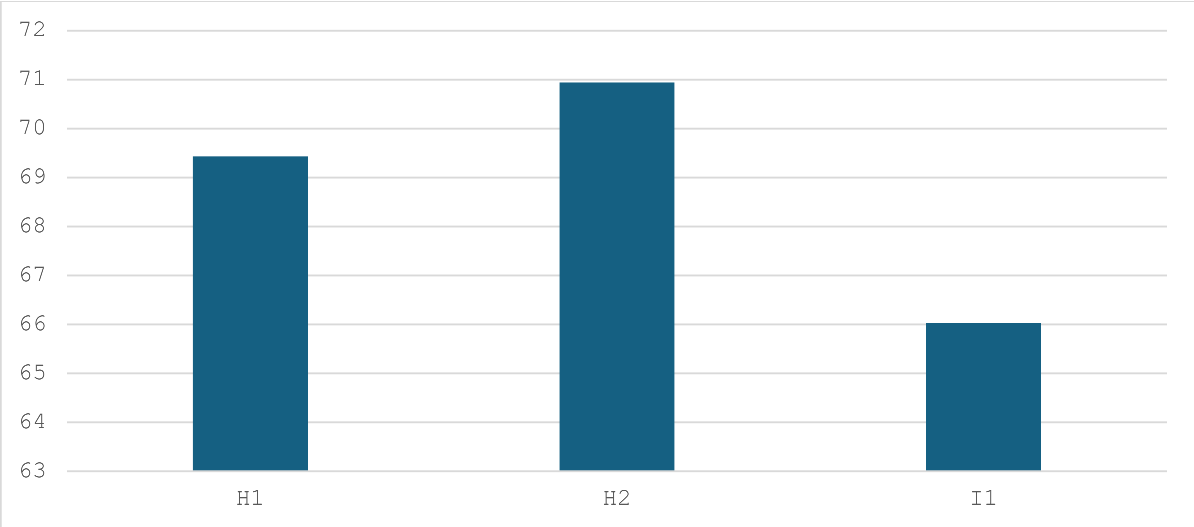

ग्राफ-8: आयाम 8 के एकांशों के प्रतिशत

आयाम 9- शोध के लिए तत्परता एवं कार्यप्रणाली के अंतर्गत 66.03 प्रतिशत शोधार्थियों को स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम तैयार करना आता है, जिसमें पारंपरिक भारतीय नज़रिए और आधुनिक मुख्य विषयों का मेल हो। 59.62 प्रतिशत शोधार्थियों को अपनी रिसर्च की मान्यताओं को साबित करने के लिए मूल संस्कृत/स्थानीय भाषाओं के स्रोत की पहचान करने या भरोसेमंद अनुवाद खोजने में सक्षमता है। 38.11 प्रतिशत शोधार्थियों को उन अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नल्स की जानकारी है जो स्थानीय प्रणालियों पर आधारित अनुभव-आधारित अध्ययनों को सक्रिय रूप से प्रकाशित करते हैं। 74.71 प्रतिशत शोधार्थियों को शोध प्रस्ताव तैयार करना आता है जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकी अनुप्रयोगों के बीच सेतु का काम करे। आयाम- शोध के लिए तत्परता एवं कार्यप्रणाली के प्रति 59.6% शोधार्थी जागरूक है।

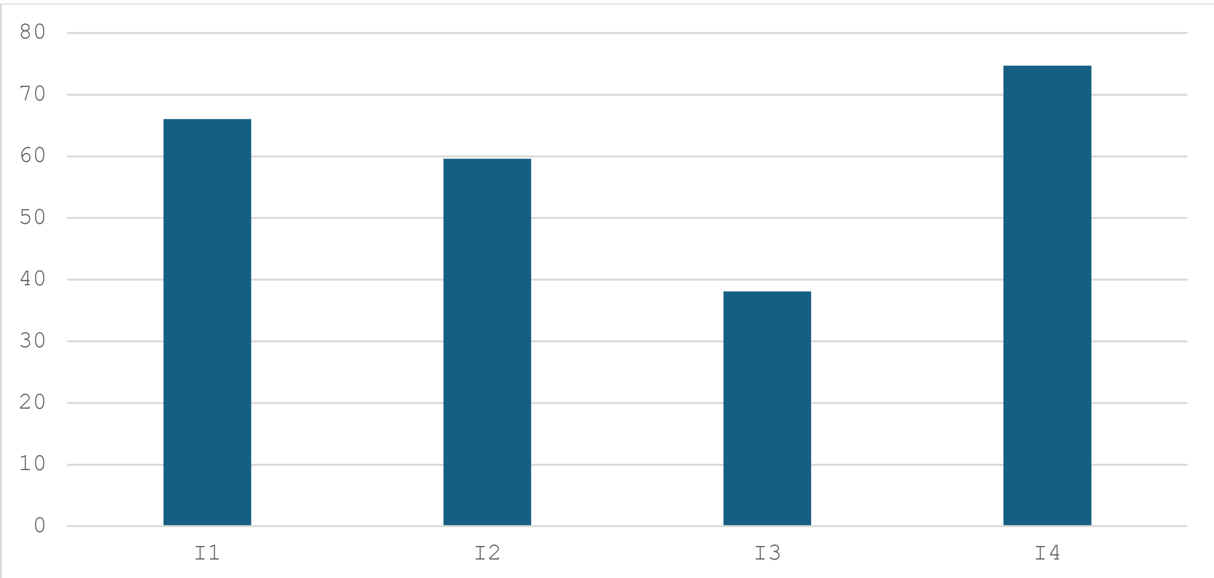

ग्राफ-9: आयाम 9 के एकांशों के प्रतिशत

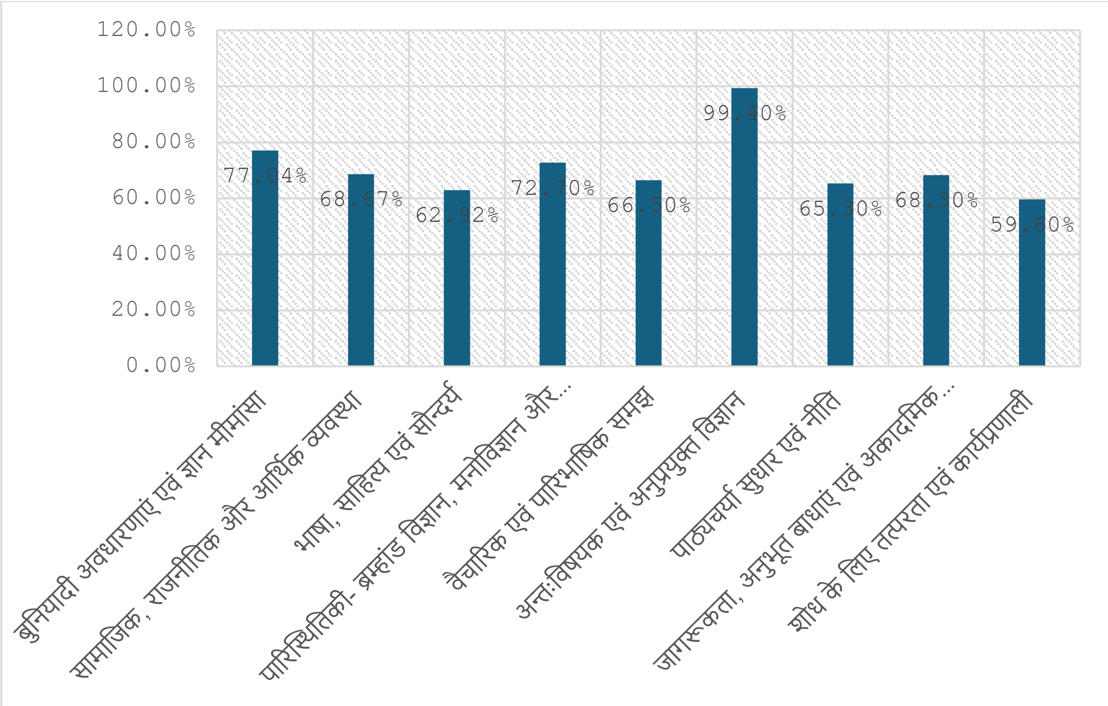

ग्राफ-10: आयामों से प्राप्त प्रतिशत

उपर्युक्त आयामों से प्राप्त प्रतिशत के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अन्तःविषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान के प्रति शोधार्थियों में अधिक सजगता है। वहीं शोध के लिए तत्परता एवं कार्यप्रणाली के प्रति जागरूकता सबसे कम है। अन्य आयामों में जागरूकता **62.92% से 77.04%** के मध्य पाई गई। इससे संकेत मिलता है कि शोधार्थियों की अन्तःविषयक एवं अनुप्रयुक्त वैज्ञानिक समझ अपेक्षाकृत अधिक विकसित है, जबकि शोध तत्परता एवं कार्यप्रणाली के क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सुधार की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

शोधार्थी किसी भी ज्ञान परंपरा के संरक्षण, संवर्धन एवं नवाचार के प्रमुख आधार होते हैं। विभिन्न विषयों के शोधार्थी अपने-अपने अध्ययन क्षेत्रों में नवीन ज्ञान का सृजन तथा समाज को दिशा प्रदान करते हैं। समकालीन शैक्षिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपराओं की अवधारणा को समझना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे भारतीय बौद्धिक विरासत के विभिन्न पक्षों का अकादमिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन संभव होता है। विभिन्न विषयों के शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन विभिन्न आयामों के आधार पर उनकी जागरूकता का विश्लेषण किया गया| अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि शोधार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति समग्र रूप से संतोषजनक जागरूकता विद्यमान है। आयामवार विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि बुनियादी अवधारणाओं एवं ज्ञानमीमांसा के प्रति शोधार्थियों की जागरूकता लगभग 77.04% रही, जबकि सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था के प्रति 68.67% तथा भाषा, साहित्य एवं सौन्दर्य के प्रति 62.92% जागरूकता पाई गई। पारिस्थितिकी, ब्रह्मांड विज्ञान, मनोविज्ञान एवं स्थिरता के प्रति 72.7% शोधार्थी जागरूक पाए गए। वैचारिक एवं पारिभाषिक समझ तथा पाठ्यचर्या सुधार एवं नीति से संबंधित जागरूकता भी अपेक्षाकृत संतोषजनक रही। अध्ययन में अन्तःविषयक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान के प्रति शोधार्थियों में सर्वाधिक जागरूकता पाई गई, जो यह संकेत करती है कि वे भारतीय ज्ञान परम्पराओं को आधुनिक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक संदर्भों से जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसके विपरीत, शोध के लिए तत्परता एवं कार्यप्रणाली के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत कम पाई गई। इससे स्पष्ट है कि शोधार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्पराओं से संबंधित मूल स्रोतों, शोध-पद्धतियों, विश्वसनीय संदर्भों, डेटाबेस, शोध-पत्रिकाओं तथा शोध प्रस्ताव निर्माण के संबंध में अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

अतः भारतीय ज्ञान परम्पराओं को उच्च शिक्षा एवं शोध से प्रभावी रूप से जोड़ने के लिए विषय-आधारित प्रशिक्षण, अन्त:विषयक शोध तथा व्यावहारिक शोध-अवसरों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सुझाव

- व्यावहारिक एवं अनुप्रयोगपरक शोध-अवसरों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि शोधार्थी भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों एवं अवधारणाओं को समकालीन शैक्षिक संदर्भों से जोड़कर उनका अध्ययन एवं विश्लेषण कर सकें।
- भगवद्गीता, उपनिषद एवं वेदों जैसे प्रमुख भारतीय ज्ञान एवं दार्शनिक ग्रंथों के व्यवस्थित अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे शोधार्थी आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता एवं संभावनाओं को समझ सकें।
- भारतीय कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं, जैसे भरतनाट्यम, शास्त्रीय संगीत आदि, के शैक्षिक एवं विकासात्मक महत्त्व से शोधार्थियों को परिचित कराया जाए, ताकि शिक्षा के बौद्धिक, भावात्मक, नैतिक एवं सृजनात्मक आयामों के समन्वय द्वारा समग्र शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके।
- क्षेत्रीय पृष्ठभूमि, मातृभाषा एवं सांस्कृतिक परिवेश जैसे कारकों का अध्ययन किया जाना चाहिए, ताकि यह समझा जा सके कि ये कारक शोधार्थियों द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणाओं के ग्रहण, समझ एवं व्याख्या को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल अतीत की ज्ञान-परंपराओं के पुनर्स्मरण तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे वर्तमान एवं भविष्य की शिक्षा से जोड़ते हुए ऐसी ज्ञान-दृष्टि के रूप में विकसित किया जाए, जो भावी पीढ़ियों में सांस्कृतिक पहचान, उद्देश्यबोध, सृजनात्मकता एवं नवाचार की भावना को सुदृढ़ कर सके।
- भारतीय एवं पश्चिमी ज्ञान प्रणालियों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन कराया जाए, जिससे शोधार्थी दोनों ज्ञान-परंपराओं की प्रकृति, ज्ञानमीमांसीय आधार, पद्धतियों एवं उद्देश्यों को समझ सकें तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल आस्था-आधारित परंपरा के रूप में देखने के बजाय उसके तार्किक, अनुभवजन्य एवं दार्शनिक आयामों का विवेकपूर्ण विश्लेषण कर सकें।

संदर्भ

1. रस्क, आर. आर. (1971). *शिक्षा का दार्शनिक आधार*. मैकमिलन।
2. ओकॉनर, डी. जे. (1967). *एन इंट्रोडक्शन टू द फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन*. रूटलेज एंड केगन पॉल।
3. नन, टी. पी. (1920). *एइम्स ऑफ टीचिंग*. एडवर्ड अर्नोल्ड।
4. बटलर, जे. डी. (1968). *फोर फिलॉसफिकल बेसिस ऑफ एजुकेशन*. हॉउटन मिफ्लिन।
5. ब्रुबाकर, जे. एस. (1969). *मॉडर्न फिलॉसफीज ऑफ एजुकेशन*. मैकग्रा-हिल।
6. कपूर, के., एवं सिंह, ए. के. (संपा.). (2005). इंडियन नॉलेज सिस्टम्स: वॉल्यूम 1—*इंडियन नॉलेज सिस्टम्स: नेचर, कंटेंट्स, कैरेक्टर एंड स्कोप. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड।*
7. दासगुप्त, एस. (1975). *ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी (खंड 1–5)*. मोतीलाल बनारसीदास।
8. राधाकृष्णन, एस., एवं मूर, सी. ए. (संपा.). (1957). *ए सोर्स बुक इन इंडियन फिलॉसफी*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. ज़िम्मर, एच. (1969). *फिलॉसफीज ऑफ इंडिया*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार।